ISSN: 0972 - 2351

मत्स्यगंधा

2006

मात्स्यिकी संपदा और प्रबंधन

केंद्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान
(भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद)
कोची 682 018

चेन्नई की समुद्री क्रस्टेशियाई संपदा

एस. लक्ष्मी पिल्लै और पी. तिरुमिलू
केंद्रीय समुद्री अनुसंधान संस्थान का चेन्नई अनुसंधान केंद्र, तमिलनाटु

चेन्नई की समुद्री क्रस्टेशियाई मात्स्यिकी, झींगा, कर्कट एवं महाचिंगट पर बनी हुई है। इसमें झींगों का योगदान 11%, कर्कटों का 3.5% और महाचिंगटों का 0.3-0.4% है। 40-50% क्रस्टेशियाइयों को विदेशी देशों में निर्यात किया जाता है और बाकी को स्थानीय उपभोग के लिए लिया जाता है। हमारे देश के समुद्री खाद्य के निर्यात के द्वारा विदेशी राजस्व कमाने में पेनिअइड झींगों एवं महाचिंगटों का मुख्यतर योगदान है।

झींगा

समुद्री तट के पेनिअइड झींगों के संग्रहण का अधिकांश अध्ययन उष्णकटिबन्ध मण्डल में किया गया है। ये झींगे बहुत जल्द ही बडे हो जाते हैं और ज्यादातर एक या दो साल ही जीवित रहते हैं। भारत की 6000 कि.मी. लम्बी समुद्र तटीय रेखा से झींगों को पकडा जाता है। झींगा मात्स्यिकी में मुख्य विकास यंत्रीकरण के तहत हुआ जिसके लिए झींगा ट्रालिंग अथवा महाजाल प्रयोग किया जाता है और आजकल झींगा ट्रॉलिंग द्वारा झींगे की अधिकाधिक पकड की जाती है। झींगा मात्स्यिकी के लिए यहाँ महाजाल, ट्रामल् जाल और बैग जाल का उपयोग करते हैं।

चेन्नई में 2004-2006 के अन्दर औसत 1443 ट. झींगों का अवतरण हुआ जिसकेलिए 349503 घंटों का प्रयत्न लगा। यहाँ के झींगा अवतरण में मुख्य वर्ग *मेटापेनिअस डोबसोनी* है। इसके बाद आते है, *पेनिअस इण्डिकस, पैरापेनेयाप्सिस माक्सिलीपेडो, मेटापेनेयस मोणोसेरस* और *मेटापेनेयोप्सिस स्ट्रिडुलन्स्*। ट्रालिंग संक्रिया की व्यापकता के कारण अपरम्परागत मत्स्य सम्पत्ति जैसे *मेटापेनिअस अफिनिस, एम. मोयबी, एम. मोगियन्सिस्, ट्राकिपेनिअस सेडिली, टी. अस्पर* और *पैरापेनेयोप्सिस स्टैलिफेरा* भी मत्स्यकी में दिखाई देने लगी।

पेनिअइड़ झींगों की सम्पत्ति, समुद्री तट की मत्स्यकी से संघटित है जो कि विभिन्न परितन्त्र जैसे नदी मुख, तटगामी और अपतट जलों से जुडा हुआ है। संघटक वर्ग एवं इनकी मात्स्यिकी हर एक पर्यावरण में समान और परस्पर निर्भर होने के कारण, झींगा मात्स्यिकी के प्रबन्ध में कोई भी प्रस्ताव, सभी पर्यावरण के जैविक और मात्स्यिकी के नाना पहलुओं के अध्ययन पर आधारित होना चाहिए।

कर्कट

वाणिज्य प्रधान कर्कट पोर्टूनिड़ परिवार के अंग है। चेन्नई में क्रस्टेशियायी अवतरण में कर्कटो का दूसरा स्थान है। इन्हें ट्राल् या महाजाल में उप पकड़ के रूप में मिलता है। इसके अलावा कर्कटों को कर्कट जाल या नण्डुजाल (तमिल में) द्वारा भी पकडा जाता है। यहाँ 2004-2006 के भीतर 484 टन कर्कट पकडे गये, जिसमें सबसे प्रथम स्थान में है, *पोर्टूनस साँगुवीनोलेन्टस,* जिसके बाद आते है, *पोर्टूनस पेलाजिकस, चारिब्डिस क्रूषियेटा, सी. नटेटर* और *पोर्टूनस ग्लेडियेटर*। *पोडोप्तालमस विजिल, सी. अरजेन्टेटस* और *सी. स्मिति,* लघु

पत्रव्यवहार : श्रीमती एस. लक्ष्मी पिल्लै
वैज्ञानिक (एस.एस.), सी एम एफ आर आइ का चेन्नई अनुसंधान केंद्र, 75, सान्तोम हाइ रोड, राजा अण्णामलैपुरम, चेन्नई - 600 028

मात्स्यिकी के रूप में अवतरण में शामिल है।

महाचिंगट

महाचिंगट शायद अपने आवास में सबसे बडा कवचप्राणी है। वे प्रवाल एवं पत्थरों में निवास करते हैं। महाचिंगट दो तरह के है - शूली महाचिंगट एवं स्लिप्पर महाचिंगट। विश्व के कई देशों में वाणिज्यिक मात्स्यकी महाचिंगट पर निर्भर करती है और जहाँ ये कम मात्रा में मौजूद है वहाँ लघु पैमाने में परम्परागत मत्स्यकी को कायम रखती है। चेन्नई की समुद्री तट से महाचिंगटों को तलीय गिल जाल (बाटम सेट गिल नेट) और ट्राल या महाजाल द्वारा पकडे जाते है। वर्ष में लगभग 1780 कि. ग्रा. शूली महाचिंगट एवं 34 टन *थीनस ओरियन्टालिस्* यहाँ के अवतरण में मिलता है। शूली महाचिंगट में *पानुलिरस होमारस* सबसे प्रमुख है जिसके बाद है *पी. ओरियन्टालिस, पी. वेर्सीकोलार* और *पी. पेन्सीलेटस*। महाचिंगटों के परिरक्षण के लिए यह अत्यंत जरूरी है कि अण्डेवाली मादा जातियों को एवं किशोर महाचिंगटों को वापस समुद्र में लौटा दिया जाये।

उप पकड

चेन्नई के समुद्री तट से महाजाल के द्वारा लगभग 1000 टन उप पकड का अवतरण होता है। इसमें मुख्य योगदान मछलियों का है (60%), जिसके बाद दूसरे स्थान पर क्रस्टेशियाई है (35%) और अन्त में मोलस्क (5%)। क्रस्टेशियायी उप पकड में कर्कट पहले स्थान पर है - 55%, दूसरे स्थान पर स्टोमाटोपोड़ - 20%, फिर झींगे - 15% और महाचिंगट - 5%। इनको मछली आहार कारखानों में और खाद्य के रूप में उपयोग किया जाता है।

उप पकड में वाणिज्यिक झींगों के किशोर एवं अप्रमुख क्रस्टेशियायी वर्ग पाये जाते है। मान्टिस झींगे का उप पकड में मुख्य योगदान होने के बावजूद, कुछ साल पहले तक वे एक उपेक्षित वर्ग रहे इनको थोडा बहुत महत्व हाल ही में प्राप्त हुआ जब वे मछली आहार, कुक्कुट आहार एवं खाद्य के लिए कच्चे माल के रूप में उपयोग किये जाने लगे। इस कारण इनके भाव भी बढ़ गया। चेन्नई में प्राप्त मुख्य स्टोमाटोपोड़ *ओराटोस्कुल्ला नीपा, हार्पियोस्कुल्ला हार्पाक्स, एच. अनन्डली*, ओ. गोणिप्टीस, *एच. रापिडे*, इत्यादि है।

मछुवारे इस बात को समझने लगे है कि सम्पत्ति के ठीक प्रबन्ध और शोषण के नई तरीके, मत्स्य सम्पत्ति को सुरक्षित रखने के लिए अत्यधिक आवश्यक है। मात्स्यिकी परिरक्षण का मुख्य लक्ष्य सामाजिक एवं आर्थिक सुविधा के लिए मत्स्य सम्पत्ति की निरन्तर प्राप्ति बनाई रखनी है।

मुख्य शब्द/Keywords
क्रस्टेशियाई - crustacean
झींगा - prawn
महाचिंगट - lobster
कर्कट - crab
उपपकड - bycatch
स्टामाटोपोड/रंध्रपाद - stomatopod